



Sonal Mandloi

06 Nov 1990

02:40 PM

Katni

Model: Web-MyKundli

Order No: 119277601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 06/11/1990
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 14:40:00 घंटे
इष्ट _____: 20:57:42 घटी
स्थान _____: Katni
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:47:00 उत्तर
रेखांश _____: 80:29:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:08:04 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 14:31:56 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 17:33:14 घंटे
सूर्योदय _____: 06:16:55 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:26:24 घंटे
दिनमान _____: 11:09:30 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 19:57:44 तुला
लग्न के अंश _____: 27:16:26 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: आर्द्रा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: सिद्ध
करण _____: कौलव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: कू-कुसुम
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1912	कार्तिक	15
पंजाबी	संवत : 2047	कार्तिक	21
बंगाली	सन् : 1397	कार्तिक	20
तमिल	संवत : 2047	आइपसी	21
केरल	कोल्लम : 1166	तुलम	20
नेपाली	संवत : 2047	कार्तिक	21
चैत्रादि	संवत : 2047	मार्गशीर्ष	कृष्ण 4
कार्तिकादि	संवत : 2047	कार्तिक	कृष्ण 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 13:17:47
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 11:16:27 घंटे
जन्म योग _____ : आर्द्रा
सूर्योदय कालीन योग _____ : शिव
योग समाप्ति काल _____ : 11:32:54 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 13:17:47 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 08:28:55
भभोग _____ : 55:00:52
भोग्य दशा काल _____ : राहु 15 वर्ष 2 मा 11 दि

घात चक्र

मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

Shri Dadaji Jyotish kendra

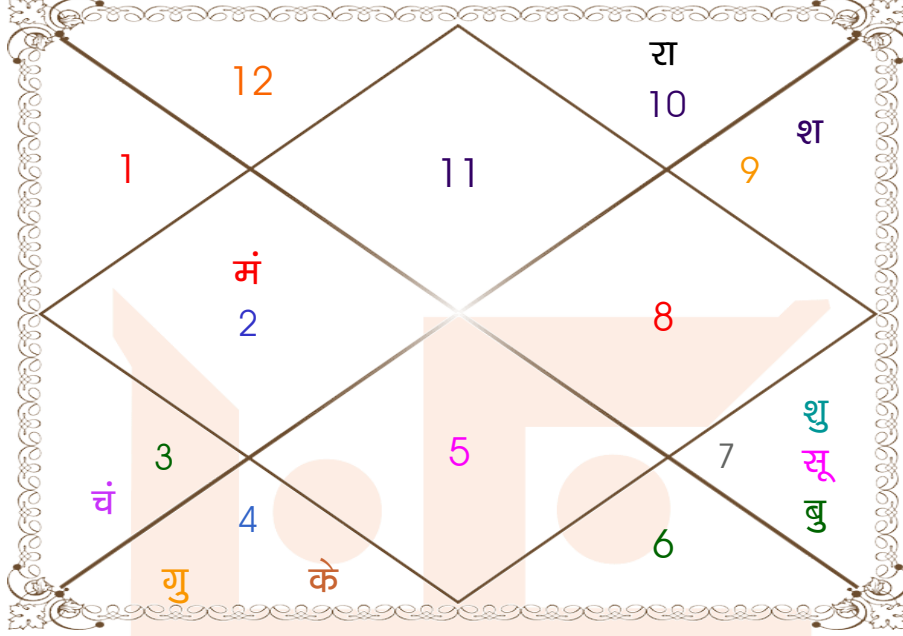
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

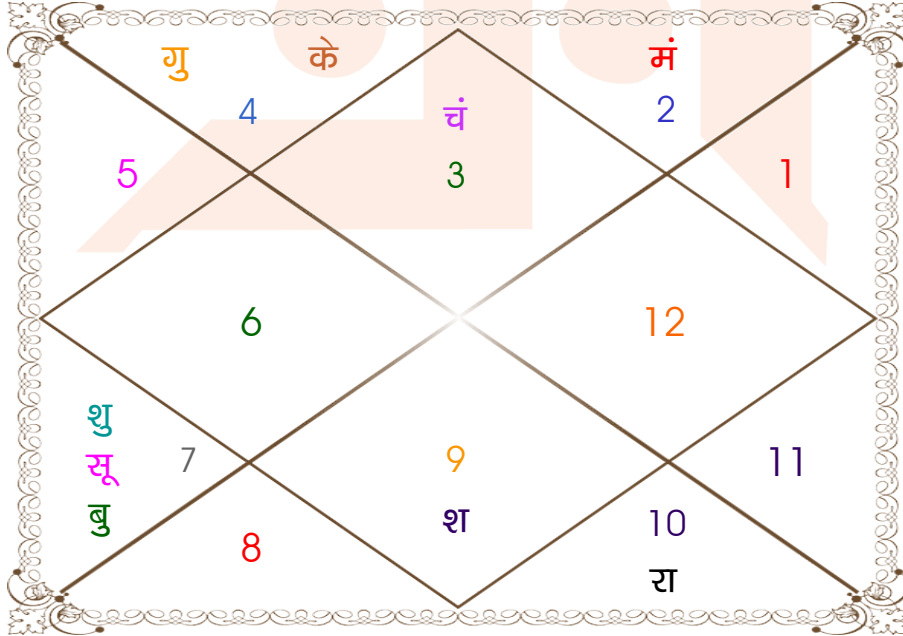
dadajiJyotishkendra@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

		मं	चं
ल			के गु
रा			
श		शु सू बु	

लग्न कुण्डली

मं		
चं		ल
के गु		रा
	बु सू शु	श

विंशोत्तरी
राहु 15वर्ष 2मा 11दि
राहु

06/11/1990

19/01/2108

राहु	17/01/2006
गुरु	17/01/2022
शनि	17/01/2041
बुध	17/01/2058
केतु	17/01/2065
शुक्र	17/01/2085
सूर्य	17/01/2091
चन्द्र	18/01/2101
मंगल	19/01/2108

योगिनी
मंगला 0वर्ष 10मा 4दि
संकटा

10/09/2018

10/09/2026

संकटा	21/06/2020
मंगला	10/09/2020
पिंगला	19/02/2021
धान्या	21/10/2021
भ्रामरी	10/09/2022
भद्रिका	21/10/2023
उल्का	19/02/2025
सिद्धा	10/09/2026

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

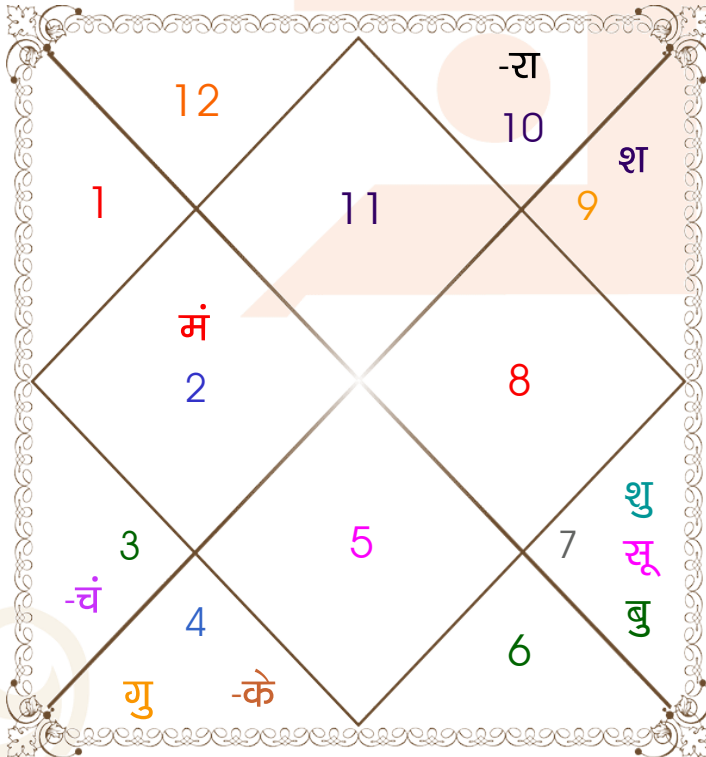
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	27:16:26	483:32:39	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
सूर्य			तुला	19:57:44	01:00:10	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	नीच राशि
चंद्र			मिथु	08:44:33	14:39:36	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	मित्र राशि
मंगल	व		वृष	18:49:13	00:14:18	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	सम राशि
बुध		अ	तुला	29:10:43	01:32:51	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	मित्र राशि
गुरु			कर्क	18:57:12	00:04:29	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	उच्च राशि
शुक्र		अ	तुला	21:09:44	01:15:16	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	स्वराशि
शनि			धनु	26:32:22	00:04:07	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	सम राशि
राहु	व		मक	07:37:41	00:03:58	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	07:37:41	00:03:58	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	मित्र राशि
हर्ष			धनु	13:00:36	00:02:29	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
नेप			धनु	18:34:53	00:01:23	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
प्लूटो			तुला	23:48:46	00:02:25	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
दशम भाव			धनु	00:07:36	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	केतु	--

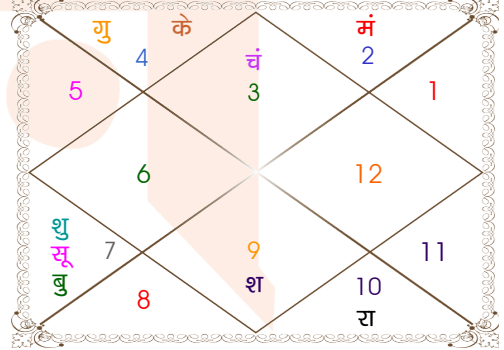
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:43:58

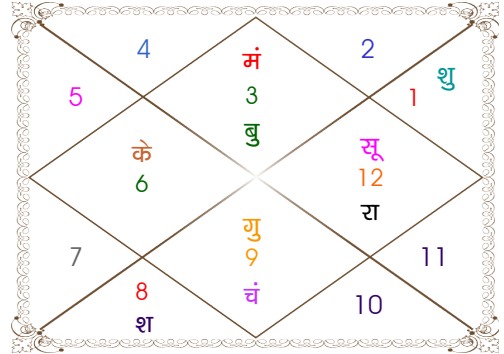
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 12:44:58	कुम्भ 27:16:26
2	मीन 12:44:58	मीन 28:13:30
3	मेष 13:42:01	मेष 29:10:33
4	वृष 14:39:05	मिथुन 00:07:36
5	मिथुन 14:39:05	मिथुन 29:10:33
6	कर्क 13:42:01	कर्क 28:13:30
7	सिंह 12:44:58	सिंह 27:16:26
8	कन्या 12:44:58	कन्या 28:13:30
9	तुला 13:42:01	तुला 29:10:33
10	वृश्चिक 14:39:05	धनु 00:07:36
11	धनु 14:39:05	धनु 29:10:33
12	मकर 13:42:01	मकर 28:13:30

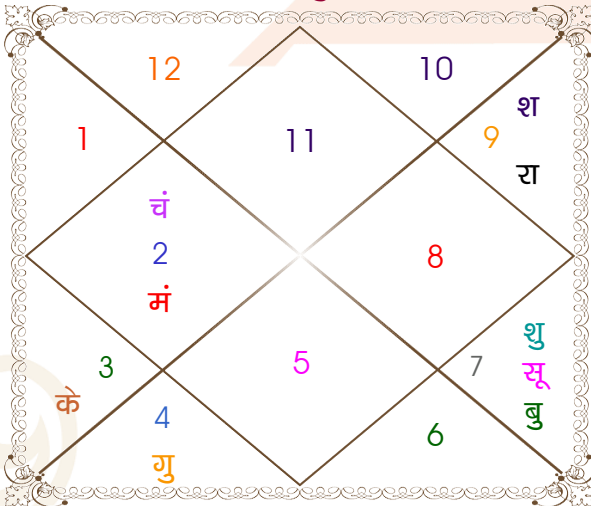
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ 27:16:26	
2	मेष 04:52:30	
3	वृष 04:52:03	
4	मिथुन 00:07:36	
5	मिथुन 24:36:08	
6	कर्क 22:15:55	
7	सिंह 27:16:26	
8	तुला 04:52:30	
9	वृश्चिक 04:52:03	
10	धनु 00:07:36	
11	धनु 24:36:08	
12	मकर 22:15:55	

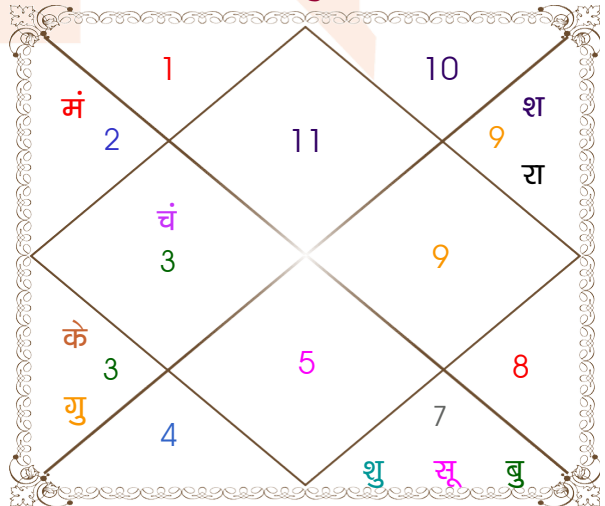
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 15 वर्ष 2 मास 11 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
06/11/1990	17/01/2006	17/01/2022	17/01/2041	17/01/2058
17/01/2006	17/01/2022	17/01/2041	17/01/2058	17/01/2065
06/11/1990	गुरु 06/03/2008	शनि 20/01/2025	बुध 15/06/2043	केतु 15/06/2058
गुरु 22/02/1993	शनि 18/09/2010	बुध 30/09/2027	केतु 12/06/2044	शुक्र 15/08/2059
शनि 30/12/1995	बुध 23/12/2012	केतु 08/11/2028	शुक्र 12/04/2047	सूर्य 21/12/2059
बुध 19/07/1998	केतु 29/11/2013	शुक्र 08/01/2032	सूर्य 17/02/2048	चंद्र 21/07/2060
केतु 06/08/1999	शुक्र 30/07/2016	सूर्य 20/12/2032	चंद्र 18/07/2049	मंगल 17/12/2060
शुक्र 06/08/2002	सूर्य 19/05/2017	चंद्र 22/07/2034	मंगल 16/07/2050	राहु 05/01/2062
सूर्य 01/07/2003	चंद्र 18/09/2018	मंगल 30/08/2035	राहु 01/02/2053	गुरु 12/12/2062
चंद्र 29/12/2004	मंगल 24/08/2019	राहु 06/07/2038	गुरु 10/05/2055	शनि 21/01/2064
मंगल 17/01/2006	राहु 17/01/2022	गुरु 17/01/2041	शनि 17/01/2058	बुध 17/01/2065
शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
17/01/2065	17/01/2085	17/01/2091	18/01/2101	19/01/2108
17/01/2085	17/01/2091	18/01/2101	19/01/2108	00/00/0000
शुक्र 18/05/2068	सूर्य 06/05/2085	चंद्र 18/11/2091	मंगल 16/06/2101	राहु 01/10/2110
सूर्य 19/05/2069	चंद्र 05/11/2085	मंगल 18/06/2092	राहु 04/07/2102	गुरु 07/11/2110
चंद्र 17/01/2071	मंगल 13/03/2086	राहु 18/12/2093	गुरु 10/06/2103	00/00/0000
मंगल 18/03/2072	राहु 05/02/2087	गुरु 19/04/2095	शनि 19/07/2104	00/00/0000
राहु 19/03/2075	गुरु 24/11/2087	शनि 17/11/2096	बुध 16/07/2105	00/00/0000
गुरु 17/11/2077	शनि 05/11/2088	बुध 18/04/2098	केतु 12/12/2105	00/00/0000
शनि 17/01/2081	बुध 11/09/2089	केतु 17/11/2098	शुक्र 12/02/2107	00/00/0000
बुध 18/11/2083	केतु 17/01/2090	शुक्र 19/07/2100	सूर्य 19/06/2107	00/00/0000
केतु 17/01/2085	शुक्र 17/01/2091	सूर्य 18/01/2101	चंद्र 19/01/2108	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भोग्य के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 15 वर्ष 2 मा 21 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 20/01/2025 30/09/2027	शनि - केतु 30/09/2027 08/11/2028	शनि - शुक्र 08/11/2028 08/01/2032	शनि - सूर्य 08/01/2032 20/12/2032	शनि - चंद्र 20/12/2032 22/07/2034
बुध 08/06/2025 केतु 04/08/2025 शुक्र 15/01/2026 सूर्य 05/03/2026 चंद्र 26/05/2026 मंगल 23/07/2026 राहु 17/12/2026 गुरु 27/04/2027 शनि 30/09/2027	केतु 24/10/2027 शुक्र 30/12/2027 सूर्य 19/01/2028 चंद्र 22/02/2028 मंगल 17/03/2028 राहु 16/05/2028 गुरु 09/07/2028 शनि 11/09/2028 बुध 08/11/2028	शुक्र 20/05/2029 सूर्य 16/07/2029 चंद्र 21/10/2029 मंगल 27/12/2029 राहु 19/06/2030 गुरु 20/11/2030 शनि 22/05/2031 बुध 02/11/2031 केतु 08/01/2032	सूर्य 26/01/2032 चंद्र 24/02/2032 मंगल 15/03/2032 राहु 06/05/2032 गुरु 21/06/2032 शनि 15/08/2032 बुध 03/10/2032 केतु 24/10/2032 शुक्र 20/12/2032	चंद्र 07/02/2033 मंगल 12/03/2033 राहु 07/06/2033 गुरु 23/08/2033 शनि 23/11/2033 बुध 13/02/2034 केतु 18/03/2034 शुक्र 23/06/2034 सूर्य 22/07/2034
शनि - मंगल 22/07/2034 30/08/2035	शनि - राहु 30/08/2035 06/07/2038	शनि - गुरु 06/07/2038 17/01/2041	बुध - बुध 17/01/2041 15/06/2043	बुध - केतु 15/06/2043 12/06/2044
मंगल 14/08/2034 राहु 14/10/2034 गुरु 07/12/2034 शनि 09/02/2035 बुध 07/04/2035 केतु 01/05/2035 शुक्र 08/07/2035 सूर्य 28/07/2035 चंद्र 30/08/2035	राहु 03/02/2036 गुरु 20/06/2036 शनि 02/12/2036 बुध 29/04/2037 केतु 28/06/2037 शुक्र 19/12/2037 सूर्य 09/02/2038 चंद्र 07/05/2038 मंगल 06/07/2038	गुरु 07/11/2038 शनि 02/04/2039 बुध 11/08/2039 केतु 04/10/2039 शुक्र 07/03/2040 सूर्य 22/04/2040 चंद्र 08/07/2040 मंगल 31/08/2040 राहु 17/01/2041	बुध 21/05/2041 केतु 12/07/2041 शुक्र 05/12/2041 सूर्य 18/01/2042 चंद्र 02/04/2042 मंगल 23/05/2042 राहु 02/10/2042 गुरु 27/01/2043 शनि 15/06/2043	केतु 07/07/2043 शुक्र 05/09/2043 सूर्य 23/09/2043 चंद्र 23/10/2043 मंगल 13/11/2043 राहु 07/01/2044 गुरु 24/02/2044 शनि 21/04/2044 बुध 12/06/2044
बुध - शुक्र 12/06/2044 12/04/2047	बुध - सूर्य 12/04/2047 17/02/2048	बुध - चंद्र 17/02/2048 18/07/2049	बुध - मंगल 18/07/2049 16/07/2050	बुध - राहु 16/07/2050 01/02/2053
शुक्र 01/12/2044 सूर्य 22/01/2045 चंद्र 18/04/2045 मंगल 17/06/2045 राहु 20/11/2045 गुरु 07/04/2046 शनि 18/09/2046 बुध 11/02/2047 केतु 12/04/2047	सूर्य 28/04/2047 चंद्र 24/05/2047 मंगल 11/06/2047 राहु 28/07/2047 गुरु 07/09/2047 शनि 26/10/2047 बुध 09/12/2047 केतु 27/12/2047 शुक्र 17/02/2048	चंद्र 31/03/2048 मंगल 30/04/2048 राहु 17/07/2048 गुरु 24/09/2048 शनि 15/12/2048 बुध 26/02/2049 केतु 28/03/2049 शुक्र 23/06/2049 सूर्य 18/07/2049	मंगल 09/08/2049 राहु 02/10/2049 गुरु 19/11/2049 शनि 15/01/2050 बुध 08/03/2050 केतु 29/03/2050 शुक्र 28/05/2050 सूर्य 15/06/2050 चंद्र 16/07/2050	राहु 02/12/2050 गुरु 05/04/2051 शनि 31/08/2051 बुध 10/01/2052 केतु 04/03/2052 शुक्र 06/08/2052 सूर्य 22/09/2052 चंद्र 09/12/2052 मंगल 01/02/2053

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	9
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

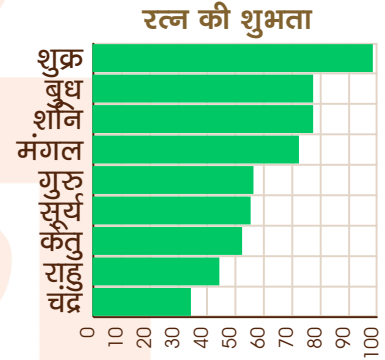
dadajijyotishkendra@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	98%	भाग्योदय, सुख
पन्ना	बुध	77%	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
नीलम	शनि	77%	धनार्जन, कम खर्च, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	72%	सुख, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन, धन
माणिक्य	सूर्य	55%	भाग्योदय, दम्पति
लहसुनिया	केतु	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	44%	व्यय, हानि
मोती	चंद्र	34%	सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	17/01/2006	34%	9%	59%	77%	56%	100%	83%	59%	28%
गुरु	17/01/2022	61%	47%	78%	64%	69%	86%	77%	44%	52%
शनि	17/01/2041	34%	9%	59%	83%	56%	100%	89%	53%	28%
बुध	17/01/2058	61%	9%	72%	89%	56%	100%	77%	44%	52%
केतु	17/01/2065	34%	9%	78%	77%	56%	100%	64%	19%	64%
शुक्र	17/01/2085	34%	9%	72%	83%	56%	100%	83%	53%	58%
सूर्य	17/01/2091	67%	47%	78%	77%	62%	86%	64%	19%	28%
चंद्र	18/01/2101	61%	55%	72%	83%	56%	98%	77%	19%	28%
मंगल	19/01/2108	61%	47%	84%	64%	62%	98%	77%	19%	58%

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
शुभ
सम
अशुभ

क्षेत्र

कम खर्च
सुख
सन्तति
शत्रु से कष्ट
दुर्घटना से बचाव

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी लेकिन शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। मांगलिक दोष के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपके पति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पति के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

अतः मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के

मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी।
दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता,

दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

षष्ठभावे में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीडित एवं दुःखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(17/01/2022 - 17/01/2041)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपके जीवन में यह 17/01/2022 को आरम्भ और 17/01/2041 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 11वें भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो अधिकांश लोगों में आतंक उत्पन्न करता है। हर क्षेत्र में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करना इसकी प्रवृत्ति है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 11वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि प्रथम, पंचम तथा अष्टम भावों पर है और यह उनके कार्य को सम्पादित कर रहा है। 11वा भाव, जिसमें यह स्थित है, मित्र, समुदाय, महत्वाकांक्षाओं, कामनाओं तथा उनकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, लाभ, खुशहाली, बड़े भाई, भाग्योदय आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 11वें भाव में स्थित है और अपने भाव अर्थात् कामनाओं इच्छाओं की पूर्ति के भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको किसी गम्भीर बीमारी अथवा दुर्घटना नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि की वर्तमानों दशा में आपकी इच्छाओं की पूर्ति, लाभ और धन का संग्रह होगा। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा और जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलेगा। किन्तु, आपके लक्ष्यों की पूर्ति में बाधाएं भी उत्पन्न करेगा जिन पर आप अपने भाइयों तथा मित्रों की सहायता से विजय प्राप्त करेंगे।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सफल होंगे और सरकारी स्रोतों से धन का उपार्जन करेंगे। आपके राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अच्छी सम्भावना है जहाँ आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और पारिवारिक सुख-आनन्द का लाभ उठाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्च कम होंगे जो आज्ञाकारी होंगे और आपका आदर करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा के लिए यह दशा अनुकूल है। आप अपनी शिक्षा सफलता पूर्वक पूरी करेंगे और साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेंगे।

अंतर्दशा :- शनि - शनि
(17/01/2022 - 20/01/2025)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/01/2022 को प्रारंभ होकर 17/01/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 17/01/2022 को प्रारंभ होकर 20/01/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। इसे यद्यपि अशुभ समझा जाता है, परंतु यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभ फल में देरी तो करता है, परंतु फल मिलता अवश्य है। एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके अधीनस्थ बहुत से कर्मचारी काम कर सकते हैं। सरकार के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। आप आमोद-प्रमोद के शौकीन हैं, लेकिन इस अवधि में आपके मित्रों की संख्या में कमी आ सकती है। स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।
- पीपल को जल दें।

अंतर्दशा :- शनि - बुध
(20/01/2025 - 30/09/2027)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 17/01/2022 को प्रारंभ होकर 17/01/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 20/01/2025 को प्रारंभ होकर 30/09/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। नवम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान बनेंगे; विदेश में भी व्याख्यान दे सकते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञान के कारण धनी बनेंगे। पिता और अन्य परिवारजनों से संबंध मधुर होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शनि - केतु
(30/09/2027 - 08/11/2028)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/01/2022 को प्रारंभ होकर 17/01/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 30/09/2027 को प्रारंभ होकर 08/11/2028 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं; प्रसिद्ध बनेंगे। आपकी किसी से भी शत्रुता नहीं होगी। चरित्र में हास न होने दें। अतींद्रिय शक्ति का विकास हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(08/11/2028 - 08/01/2032)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/01/2022 को प्रारंभ होकर 17/01/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 08/11/2028 को प्रारंभ होकर 08/01/2032 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान, प्रसिद्ध और प्रसन्न होंगे। आपका व्यवहार शिष्ट और मुग्धकारी होगा। विचार नीतिपूर्ण और संतुलित होंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ व्यवहार में सावधानी आवश्यक है क्योंकि उनसे विवाद हो सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।